

राजनारायण बोहरे की कहानियों में दलित, वंचित और श्रमिक संवेदना का विश्लेषण**डॉ. पद्मा शर्मा**

प्राध्यापक, हिन्दी
 महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य
 महाविद्यालय ग्वालियर, म. प्र.

विनय कुमार जैन

जीवाजी विश्वविद्यालय
 ग्वालियर, म. प्र.

Paper Received date

05/11/2025

Paper date Publishing Date

10/11/2025

DOI<https://doi.org/10.5281/zenodo.20477137>**IMPACT FACTOR****5.924****सारांश (Abstract)**

समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम कहानी रही है। विशेषतः दलित, वंचित और श्रमिक वर्ग की समस्याएँ, संघर्ष और चेतना आधुनिक हिंदी कहानी का केंद्रीय सरोकार बन चुकी हैं। राजनारायण बोहरे ऐसे कथाकार हैं जिनकी कहानियों में हाशिए पर स्थित समाज की पीड़ा केवल सहानुभूति के स्तर पर नहीं, बल्कि गहन मानवीय संवेदना और सामाजिक चेतना के रूप में व्यक्त होती है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य राजनारायण बोहरे की कहानियों में अभिव्यक्त दलित, वंचित और श्रमिक संवेदना का विश्लेषण करना है। बोहरे की कथा-दृष्टि सामाजिक विषमता, जातिगत भेदभाव, आर्थिक शोषण और श्रम के अवमूल्यन जैसे प्रश्नों को कथा-वस्तु बनाती है। उनके पात्र प्रायः निम्नवर्गीय श्रमिक, दलित और उपेक्षित समुदायों से आते हैं, जिनका जीवन संघर्षों से घिरा हुआ है।

बोहरे की कहानियाँ यथार्थवादी होते हुए भी मानवीय करुणा, आत्मसम्मान और प्रतिरोध की चेतना से संपन्न हैं। वे दलित और श्रमिक पात्रों को निष्क्रिय पीड़ित के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक अन्याय के विरुद्ध खड़े होने वाले चेतन मनुष्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं। इस शोध में यह स्पष्ट किया गया है कि राजनारायण बोहरे की कहानियाँ समकालीन हिंदी कहानी में दलित-वंचित संवेदना को नई दृष्टि प्रदान करती हैं तथा सामाजिक न्याय के विमर्श को साहित्यिक गहराई देती हैं।

कुंजी शब्द (Keywords) : राजनारायण बोहरे, हिंदी कहानी, दलित संवेदना, श्रमिक वर्ग, वंचित समाज, सामाजिक यथार्थ, समकालीन चेतना।



International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में कहानी विधा सामाजिक यथार्थ की सबसे सशक्त अभिव्यक्ति रही है। स्वतंत्रता के पश्चात बदलते सामाजिक-आर्थिक परिवेश में दलित, वंचित और श्रमिक वर्ग की समस्याएँ साहित्य के केंद्र में आईं। विशेषतः समकालीन हिंदी कहानी ने समाज के उस वर्ग को स्वर प्रदान किया, जो लंबे समय तक साहित्यिक अभिव्यक्ति से वंचित रहा। राजनारायण बोहरे समकालीन हिंदी कहानी के ऐसे महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं, जिनकी कहानियाँ सामाजिक यथार्थ, वर्गीय विषमता और मानवीय संवेदना से गहराई से जुड़ी हुई हैं। उनका कथा-संसार ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी जीवन के अनुभवों से निर्मित है, जहाँ श्रमिक, दलित और वंचित वर्ग निरंतर संघर्षरत दिखाई देता है।

बोहरे की कहानियों की विशेषता यह है कि वे समाज के हाशिए पर खड़े व्यक्ति को केवल करुणा का पात्र नहीं बनातीं, बल्कि उसे सामाजिक चेतना से युक्त एक सक्रिय इकाई के रूप में प्रस्तुत करती हैं। उनकी संवेदना में यथार्थ का तीखापन है, परंतु साथ ही मानवीय करुणा और परिवर्तन की आकांक्षा भी निहित है। इसी दृष्टि से राजनारायण बोहरे की कहानियों में दलित, वंचित और श्रमिक संवेदना का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. राजनारायण बोहरे की कहानियों में दलित, वंचित और श्रमिक संवेदना के स्वरूप का अध्ययन करना।
2. उनकी कहानियों में सामाजिक शोषण, वर्गीय विषमता और जातिगत भेदभाव की अभिव्यक्ति का विश्लेषण करना।
3. दलित एवं श्रमिक पात्रों के माध्यम से व्यक्त चेतना, प्रतिरोध और आत्मसम्मान की प्रवृत्तियों को रेखांकित करना।
4. समकालीन हिंदी कहानी के संदर्भ में राजनारायण बोहरे के कथा-योगदान का मूल्यांकन करना।

शोध-विधि

प्रस्तुत शोध-पत्र में **विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक एवं विवेचनात्मक शोध-विधि** का प्रयोग किया गया है। राजनारायण बोहरे के कहानी-संग्रहों की चयनित कहानियों को प्राथमिक स्रोत के रूप में ग्रहण किया गया है। द्वितीयक स्रोतों के रूप में हिंदी कहानी, दलित विमर्श, श्रमिक साहित्य तथा समकालीन आलोचना से संबंधित ग्रंथों और शोध-पत्रों का सहारा लिया गया है। अध्ययन में समाजशास्त्रीय एवं साहित्यिक दृष्टिकोण को समन्वित करते हुए यह विश्लेषण किया गया है कि किस प्रकार सामाजिक यथार्थ कथा-संवेदना का रूप ग्रहण करता है।

दलित, वंचित और श्रमिक संवेदना

राजनारायण बोहरे की कहानियों की विषय-वस्तु का केंद्रीय आधार दलित, वंचित और श्रमिक वर्ग की संवेदना है। यह संवेदना मात्र सामाजिक सहानुभूति तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें ऐतिहासिक शोषण, जातिगत भेदभाव, आर्थिक अन्याय और मानवीय अस्मिता की तलाश एक साथ विद्यमान है। बोहरे का कथा-लेखन उस समाज का दस्तावेज है, जहाँ हाशिए पर खड़ा मनुष्य निरंतर संघर्षरत है, किंतु अपनी मानवीय गरिमा को बनाए रखने का प्रयास भी करता है। मुख्य रूप से यह कहा जा सकता है कि बोहरे की कहानियाँ सत्ता-संरचनाओं द्वारा निर्मित असमानताओं को उजागर करती हैं। दलित और श्रमिक पात्र उनके यहाँ निरीह नहीं, बल्कि अनुभव-संपन्न और जीवन के कटु यथार्थ से टकराने वाले पात्र हैं। लेखक इन पात्रों की पीड़ा को 'दया' के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक प्रश्न के रूप में प्रस्तुत करता है। यही कारण है कि उनकी संवेदना सामाजिक चेतना में रूपांतरित होती दिखाई देती है।

राजनारायण बोहरे की कथा-दृष्टि समकालीन हिंदी कहानी की उस परंपरा से जुड़ती है, जहाँ साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम माना गया है। उनकी कहानियों में वर्णित दलित एवं श्रमिक जीवन केवल व्यक्तिगत दुखों का संकलन नहीं है, बल्कि वह पूरे सामाजिक ढाँचे की विसंगतियों की ओर संकेत करता है। जाति, वर्ग और श्रम—तीनों तत्व एक-दूसरे में गुंथे हुए दिखाई देते हैं। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि बोहरे की कहानियों में संवेदना का स्वर भावुकता में नहीं बदलता। वे यथार्थ का अंकन करते हुए पाठक को सोचने के लिए बाध्य करते हैं। उनके कथा-पात्र सामाजिक अन्याय को मौन स्वीकार नहीं करते, बल्कि कई स्थानों पर

प्रतिरोध की चेतना भी व्यक्त करते हैं। यह प्रतिरोध कभी शब्दों में, कभी मौन में और कभी आचरण में प्रकट होता है। इस प्रकार मुख्य हेडिंग के रूप में यह स्पष्ट होता है कि राजनारायण बोहरे की कहानियों की विषय-वस्तु दलित, वंचित और श्रमिक वर्ग की बहुआयामी संवेदना को केंद्र में रखती है, जो सामाजिक यथार्थ, मानवीय मूल्य और परिवर्तनकामी दृष्टि से संपन्न है।

दलित संवेदना : जातिगत शोषण और आत्मसम्मान - राजनारायण बोहरे की कहानियों में दलित संवेदना का मूल आधार जातिगत शोषण की गहरी अनुभूति है। उनके कथा-पात्र ऐसे सामाजिक ढाँचे में जीते हैं जहाँ जन्म ही व्यक्ति की नियति निर्धारित कर देता है। लेखक दलित जीवन को केवल अभाव, गरीबी या पीड़ा के रूप में चित्रित नहीं करता, बल्कि यह दिखाता है कि जाति-आधारित व्यवस्था किस प्रकार मनुष्य की अस्मिता और आत्मसम्मान को निरंतर आहत करती है। दलित पात्रों का दुख व्यक्तिगत न होकर सामाजिक है, जो पीढ़ियों से चली आ रही व्यवस्था का परिणाम है। बोहरे की कहानियों में दलित पात्र अक्सर दोहरी पीड़ा से गुजरते हैं—एक ओर आर्थिक शोषण और दूसरी ओर सामाजिक अपमान। कई कहानियों में यह देखा जा सकता है कि दलित पात्र मेहनत तो करता है, किंतु उसे न तो उचित मजदूरी मिलती है और न ही सामाजिक सम्मान। एक स्थान पर कथावाचक का कथन है- **“मेहनत मेरी थी, पसीना मेरा था, लेकिन पहचान आज भी मेरे नाम के आगे लगी जाति से ही तय होती थी।”**

यह पंक्ति दलित जीवन की उस त्रासदी को उजागर करती है, जहाँ श्रम का मूल्यांकन नहीं, बल्कि जाति का मूल्यांकन होता है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि बोहरे की दलित संवेदना करुणा पर नहीं, आत्मसम्मान पर केंद्रित है। उनके पात्र स्वयं को हीन नहीं मानते, बल्कि भीतर ही भीतर व्यवस्था से टकराने की चेतना विकसित करते हैं। कई कहानियों में दलित पात्र चुप रहते हुए भी मानसिक प्रतिरोध दर्ज कराते हैं। यह मौन प्रतिरोध लेखक की कथा-शिल्पगत विशेषता है, जो संवेदना को गहराई प्रदान करता है। दलित पात्रों की चेतना तब और स्पष्ट होती है जब वे अपने बच्चों के भविष्य को लेकर सोचते हैं। शिक्षा, सम्मान और समान अवसर उनकी आकांक्षाओं के केंद्र में हैं। एक कहानी में दलित पिता कहता है- **“मैं नहीं बदल पाया यह दुनिया, पर अपने बेटे को इस दलदल से बाहर निकालना चाहता हूँ।”**



International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

यह कथन दलित संवेदना को केवल पीड़ा नहीं, बल्कि भविष्य के प्रति आशा के रूप में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार राजनारायण बोहरे की कहानियों में दलित संवेदना जातिगत शोषण के यथार्थ चित्रण के साथ-साथ आत्मसम्मान, चेतना और परिवर्तन की आकांक्षा को भी अभिव्यक्त करती है। यही कारण है कि उनकी कहानियाँ समकालीन दलित विमर्श में एक सशक्त हस्तक्षेप के रूप में स्थापित होती हैं।

वंचित वर्ग की संवेदना : सामाजिक बहिष्कार और अस्मिता का संकट : बोहरे की कहानियों में वंचित वर्ग की संवेदना एक व्यापक सामाजिक यथार्थ को उद्घाटित करती है। यह वर्ग केवल आर्थिक रूप से ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से भी हाशिए पर स्थित है। लेखक उन व्यक्तियों को वंचित के रूप में प्रस्तुत करता है जो व्यवस्था का हिस्सा होते हुए भी उसके लाभों से वंचित रह जाते हैं। बोहरे की कहानियों में यह संवेदना मौन पीड़ा, उपेक्षा और अदृश्य कर दिए जाने के अनुभव से निर्मित होती है। वंचित पात्रों का सबसे बड़ा संकट उनकी पहचान का है। समाज उन्हें स्वीकार तो करता है, किंतु समान अधिकार नहीं देता। कई कहानियों में यह देखा जा सकता है कि ये पात्र न तो पूरी तरह ग्रामीण समाज में स्थान पा पाते हैं और न ही शहरी व्यवस्था में। एक कथा में कथावाचक का कथन है- **“मैं इस समाज का हिस्सा था, पर हर फैसले के समय मुझे बाहर कर दिया जाता था।”**

यह पंक्ति वंचित वर्ग की उस पीड़ा को अभिव्यक्त करती है, जहाँ उपस्थिति होते हुए भी अस्तित्व अस्वीकार कर दिया जाता है।

बोहरे की कहानियों में वंचना का रूप केवल भौतिक अभाव तक सीमित नहीं है। सम्मान, सुरक्षा और सहभागिता का अभाव अधिक पीड़ादायक है। वंचित पात्र अक्सर प्रशासन, सामाजिक संस्थाओं और प्रभावशाली वर्गों द्वारा उपेक्षित रहते हैं। लेखक इन स्थितियों का चित्रण बिना अतिनाटकीयता के करता है, जिससे संवेदना और अधिक प्रभावी हो जाती है। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि वंचित संवेदना कई बार दलित और श्रमिक संवेदना से जुड़ती हुई दिखाई देती है। जाति, वर्ग और आर्थिक स्थिति मिलकर वंचना की जटिल संरचना का निर्माण करते हैं। बोहरे इस जटिलता को सरल कथानक के माध्यम से उजागर करते हैं। एक स्थान पर पात्र कहता है- **“मेरे हिस्से में न तो जाति का गौरव था, न ही पैसे की ताकत—बस खाली हाथ और भरा हुआ डर।”**

यह कथन वंचित वर्ग की मानसिक स्थिति को सटीक रूप से रेखांकित करता है। इस प्रकार राजनारायण बोहरे की कहानियों में वंचित वर्ग की संवेदना सामाजिक बहिष्कार, अस्मिता संकट और उपेक्षा के अनुभवों से निर्मित होती है। लेखक इन पात्रों के माध्यम से उस समाज की आलोचना करता है जो बराबरी का दावा तो करता है, पर व्यवहार में भेदभाव को बनाए रखता है।

श्रमिक संवेदना : श्रम, शोषण और प्रतिरोध की चेतना : राजनारायण बोहरे की कहानियों में श्रमिक संवेदना उनकी कथा-विषयवस्तु का अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है। लेखक श्रमिक जीवन को केवल आर्थिक संघर्ष के रूप में नहीं देखता, बल्कि उसे मानवीय अस्तित्व और सामाजिक अन्याय से जोड़कर प्रस्तुत करता है। बोहरे के श्रमिक पात्र वे लोग हैं जिनके श्रम पर समाज की संरचना टिकी है, किंतु जिन्हें उसी समाज में सम्मान और सुरक्षा प्राप्त नहीं होती। इस विरोधाभास को लेखक बड़ी सहजता और गहराई से उजागर करता है। बोहरे की कहानियों में श्रमिक शोषण के विविध रूप दिखाई देते हैं—अस्थायी रोजगार, कम मजदूरी, असुरक्षित कार्य-स्थितियाँ और मालिक वर्ग का अमानवीय व्यवहार। कई कथाओं में यह स्पष्ट होता है कि श्रमिक का श्रम वस्तु में बदल दिया गया है। एक कहानी में श्रमिक पात्र का कथन है-

“दिन भर मशीन की तरह चलता रहा, पर शाम को मुझे इंसान समझने वाला कोई नहीं था।”

यह पंक्ति श्रमिक जीवन की उस विडंबना को व्यक्त करती है, जहाँ मनुष्य अपने श्रम के कारण ही अमानवीय बन जाता है।

महत्त्वपूर्ण यह है कि बोहरे की श्रमिक संवेदना केवल पीड़ा तक सीमित नहीं रहती, बल्कि धीरे-धीरे प्रतिरोध की चेतना में परिवर्तित होती है। उनके श्रमिक पात्र शोषण को समझने लगते हैं और भीतर ही भीतर उसके विरुद्ध प्रश्न उठाने लगते हैं। यह प्रतिरोध कभी खुलकर सामने आता है, तो कभी मौन असहमति के रूप में। लेखक इस चेतना को किसी आंदोलनात्मक नारे की तरह नहीं, बल्कि जीवनानुभव से उपजी जागरूकता के रूप में प्रस्तुत करता है। श्रमिक पात्रों की संवेदना उनके परिवार और सामाजिक जीवन से भी जुड़ी हुई है। वे अपने बच्चों के भविष्य, घर की जिम्मेदारियों और सामाजिक असुरक्षा से निरंतर जूझते रहते हैं। एक कथा में श्रमिक पिता कहता है—

“मेरे हाथों की लकीरों में मेहनत ही मेहनत है, पर मेरे बच्चों की किस्मत मैं बदलना चाहता हूँ।”



International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

यह कथन श्रमिक संवेदना को आशा और परिवर्तन की आकांक्षा से जोड़ता है। इस प्रकार राजनारायण बोहरे की कहानियों में श्रमिक संवेदना श्रम, शोषण और प्रतिरोध की त्रयी के रूप में विकसित होती है। लेखक श्रमिक वर्ग को केवल दयनीय स्थिति में नहीं रखता, बल्कि उन्हें सामाजिक परिवर्तन की संभावनाओं से युक्त पात्रों के रूप में प्रस्तुत करता है। यही दृष्टि बोहरे को समकालीन हिंदी कथाकारों में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है।

शोध निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि राजनारायण बोहरे की कहानियाँ समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में दलित, वंचित और श्रमिक संवेदना की सशक्त एवं यथार्थपरक अभिव्यक्ति प्रस्तुत करती हैं। उनकी कथा-दृष्टि सामाजिक यथार्थ से गहराई से जुड़ी हुई है और हाशिए पर स्थित वर्गों के जीवन-संघर्ष को मानवीय गरिमा के साथ चित्रित करती है। शोध से यह तथ्य सामने आया है कि बोहरे की कहानियों में दलित और श्रमिक पात्र केवल सामाजिक शोषण के शिकार नहीं हैं, बल्कि उनमें आत्मसम्मान, चेतना और प्रतिरोध की भावना भी विद्यमान है। लेखक उनकी पीड़ा को केवल करुणा के स्तर पर नहीं छोड़ता, बल्कि उसे सामाजिक अन्याय के विरुद्ध एक वैचारिक स्वर प्रदान करता है।

यह भी निष्कर्ष निकलता है कि बोहरे की कहानियों में दलित, वंचित और श्रमिक संवेदना एक-दूसरे से अलग नहीं, बल्कि परस्पर संबद्ध है। जातिगत भेदभाव और आर्थिक शोषण मिलकर वंचना की जटिल संरचना का निर्माण करते हैं। लेखक इस बहुस्तरीय शोषण को सहज किंतु प्रभावी ढंग से उद्घाटित करता है। समग्र रूप से कहा जा सकता है कि राजनारायण बोहरे की कहानियाँ सामाजिक न्याय, समानता और मानवीय मूल्यों की स्थापना की दिशा में साहित्यिक हस्तक्षेप करती हैं।

शोध की नवीनता

इस शोध-पत्र की प्रमुख नवीनता निम्नलिखित बिंदुओं में निहित है—

1. राजनारायण बोहरे की कहानियों में **दलित, वंचित और श्रमिक संवेदना** का **समन्वित अध्ययन** प्रस्तुत किया गया है, जो पूर्ववर्ती अध्ययनों में अपेक्षाकृत कम दृष्टिगोचर होता है।

2. शोध में संवेदना को केवल भावात्मक नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और प्रतिरोध के संदर्भ में विश्लेषित किया गया है।
3. बोहरे की कहानियों को समकालीन हिंदी दलित एवं श्रमिक विमर्श से जोड़कर उनका मूल्यांकन किया गया है।
4. कथ्य और शिल्प के अंतर्संबंध के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि संवेदना केवल विषय-वस्तु में ही नहीं, बल्कि कथा-रचना की संरचना में भी अंतर्निहित है।

इस प्रकार यह शोध हिंदी कहानी आलोचना के क्षेत्र में एक मौलिक योगदान प्रस्तुत करता है।

सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं—

1. राजनारायण बोहरे के संपूर्ण कथा-साहित्य पर **अलग से तुलनात्मक अध्ययन** किया जा सकता है।
2. उनकी कहानियों की तुलना अन्य समकालीन दलित एवं श्रमिक कथाकारों से कर व्यापक निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं।
3. बोहरे की कहानियों को **शैक्षणिक पाठ्यक्रमों** में सम्मिलित किया जाना चाहिए, ताकि सामाजिक संवेदनशीलता का विकास हो।
4. भविष्य में उनकी कहानियों पर **अनुवाद-अध्ययन** और **अंतरविषयक शोध** की संभावनाएँ तलाशी जा सकती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. बोहरे, राजनारायण. (1999). *इज्जत आबरू*. दिल्ली : यात्री प्रकाशन ।
2. बोहरे, राजनारायण. (2002). *गोस्टा तथा अन्य कहानियाँ*. दिल्ली : मेघा बुक्स ।
3. बोहरे, राजनारायण. (2013). *हादसा*. दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ ।
4. बोहरे, राजनारायण. (2018). *मेरी प्रिय कथाएं*. गाजियाबाद : ज्योति पर्व प्रकाशन ।
5. शर्मा, सुरेश. (2013). *हिंदी साहित्य में सामाजिक और सांस्कृतिक संवेदना*. ग्वालियर: विद्यापीठ प्रकाशन।



International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

6. पांडे, हेमन्त. (2018). *हिंदी कथा में लोकजीवन और सामाजिक यथार्थ का चित्रण*. वाराणसी: संस्कृतिप्रभा।
7. मिश्रा, धर्मवीर. (2016). *समकालीन हिंदी कथाकारों की सामाजिक दृष्टि*. पटना: साहित्य विज्ञान केंद्र।
8. चौहान, लक्ष्मीनारायण. (2017). *हिंदी कथा में जीवन और यथार्थ का चित्रण*. नई दिल्ली: साहित्य भारती।
9. सिंह, मोहनलाल. (2016). *समकालीन हिंदी कथाकारों का सामाजिक चिंतन*. भोपाल: राजकीय हिन्दी विश्वविद्यालय प्रकाशन।
10. कुमार, रामप्रसाद. (2018). *समकालीन हिंदी कथा: दृष्टि और विमर्श*. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
11. मिश्रा, सुशील कुमार. (2017). *हिंदी कहानी में पात्र निर्माण और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण*. दिल्ली: साहित्य प्रबोध।